सूचीपत्र

कबीर साहेब की शब्दावली

॥ चौथा भाग ॥

राग मंगल

(१)

पिया मिलन की आस, रहौं कब लौं खड़ी।
ऊँचे चढ़ि नहिँ जाय, मनैं लज्जा भरी ॥ १ ॥
पाँव नहीं ठहराय, चढ़ूँ गिरि गिरि पड़ूँ।
फिरि फिरि चढ़हुँ सम्हारि, चरन आगे धरूँ ॥ २ ॥
अंग अंग थहराय, तो बहु बिधि डरि रहूँ।
कर्म कपट मग घेरि, तो भ्रम में भुलि रहूँ ॥ ३ ॥
निपट वारि अनारि, तो झीनी गैल है।
अटपट चाल तुम्हारि, मिलन कस होइ है ॥ ४ ॥
तेजो[1] कुमति विकार, सुमति गहि लीजिये।
सतगुरु सब्द सम्हारि, चरन चित दीजिये ॥ ५ ॥
अंतर पट दे खोल, सब्द उर लाव री।
दिल बिच दास कबीर, मिलैं तोहि बावरी ॥ ६ ॥

(२)

उठो सोहंगम नारि, प्रीति पिया सों करो।
यह उरले[2] ब्योहार, दूर दुरमति धरो ॥ १ ॥
पाँच चोर बड़ जोर, संगि एते घने।
इन ठगियन के साथ, मुसै घर निसु दिने ॥ २ ॥

---

(१) तजो, छोड़ो। (२) संसारी।

सोवत जागत चोर, करै चोरी घनी ।
आपु भये कुतवाल, भली बिधि लूटहीँ ॥ ३ ॥
द्वादस नगर मँझार, परुष इक देखिये ।
सोभा अगम अपार, सुरति छबि पेखिये ॥ ४ ॥
होत सब्द घनघोर, संख धुनि अति घनी ।
तंतन की झनकार, बजत झीनी झिनी ॥ ५ ॥
है कोइ महरम साध, भले पहिचानिये ।
सतगुरु कह कबीर, संत की बानि ये ॥ ६ ॥

(६)

गुन करु बवरी गुन करु, जब लग नैहर बास हो ।
पुनि धनि जैहौ ससुरे, कंत पियारे पास हो ॥ १ ॥
जब लग राज पिता घर, गुन करि लेहु हो ।
सासु ननद के बुलवन, उत्तर का देहु हो ॥ २ ॥
आये भाट बराम्हन, लगन धराइन हो ।
लगन सुनत गवने कै, मुँह कुम्हिलाइन हो ॥ ३ ॥
बाजन बाजै गहगहा, नगर उठै झनकार हो ।
प्रीतम कहूँ न देखल, आयो चालनहार हो ॥ ४ ॥
लै रे उतारिन तेहि घर, जहँ दिस न दुवार हो ।
मन मन झुरवै दुलहिनि, काह कीन्ह करतार हो ॥ ५ ॥
जो मैं उनतिउँ ऐसन, गुन करि लेतिउँ हो ।
जातिउँ साहिब के देसवाँ, परम सुख पौतिउँ हो ॥ ६ ॥
चेति ले बवरी चेति ले, चेति लेहु दिन चारी हो ।
यह संगत सब छूटि है, कहत कबीर बिचारी हो ॥ ७ ॥

(४)

मंगल एक अनूप, संत जन गावहीं ।
उपजै प्रेम बिलास, परम सुख पावहीं ॥ १ ॥

सतगुरु विप्र बुलाय. तो लगन लिखावहीँ ।
संत कुटुम परिवार. तो मंगल गावहीँ ॥ २ ॥
वहु विधि आरति साजि, तो चौक पुरावहीँ ।
मोतियन थार भराइ के. कलस लेसावहीँ ॥ ३ ॥
हीरा हंस बिठाय. तो सब्द सुनावहीँ ।
जेहि कुल उपजे संत. परम पद पावहीँ ॥ ४ ॥
मिटो करम को अंक, जबै आगम भयो ।
पायो सूरति सोहं. संसय सव गयो ॥ ५ ॥
भक्ति हेत चित लाय. तो आरति उर धरो ।
तजि पाखँड अभिमान. तो दुरमति परिहरो ॥ ६ ॥
तन मन धन औ प्रान. निछावर कीजिये ।
त्रिगुन फन्द निरुवारि, पान निज लीजिये ॥ ७ ॥
यह मंगल सत लोक के. हंसा गावहीँ ।
कहैँ कबीर समुझाय. वहुरि नहिँ आवहीँ ॥ ८ ॥

(२)

पूरनमासी आदि. जो मंगल गाइये ।
सतगुरु के पद परसि, परम पद पाइये ॥ १ ॥
प्रथमे मँदिल झराइ के. चँदन लिपाइये ।
नूतन वस्तर आनि के. चँदवा तनाइये ॥ २ ॥
(तब) पूरन गुरु के हेत, तो आसन बिछाइये ।
गुरु के चरन पखालि, तहाँ बैठाइये ॥ ३ ॥
गज मोतियन को चौक. सो तहाँ पुराइये ।
ता पर नरियर धोति. मिष्टान्न धराइये ॥ ४ ॥
केरा और कपूर, तो वहु विधि लाइये ।
अष्ट सुगंध सुपारि, तो पान मँगाइये ॥ ५ ॥

पल्लौ सहित सो कलसा, जोति बराइये ।
ताल मृदंग बजाइ के, मङ्गल गाइये ॥ ६ ॥
साधु संत सँग लैके, आरति उतारिये ।
आरति करि पुनि नरियर, तबहिँ मोराइये ॥ ७ ॥
पुरुष को भोग लगाइ, सखा मिलि पाइये ।
जुग जुग छुधा बुझाइ, तो पाइ अघाइये ॥ ८ ॥
परमानन्दित होय, तो गुरुहिँ मनाइये ।
कहैँ कबीर सत भाय, तो लोक सिधाइये ॥ ९ ॥

(६)

सत्त सुकृत सत नाम, सुमिरु नर प्रानी हो ।
सुमति से रचहु बियाह, कुमति घर छाड़ी हो ॥ १ ॥
सत्त सुकृत के माँड़ो, तो रुचि रुचि छावो हो ।
सतगुरु बिप्र बुलाय कै, कलस धरावो हो ॥ २ ॥
पहिली भँवरिया बेद, पढ़ै मुनि ज्ञानी हो ।
दुसरि भँवरिया तिरथ, जा को निरमल पानी हो ॥ ३ ॥
तिसरी भँवरिया भक्ति, दुबिधा जिनि लावो हो ।
चौथी भँवरिया प्रेम, प्रतीत बढ़ावो हो ॥ ४ ॥
पँचईँ भँवरिया अलख, सँग सुमति सयानी हो ।
छठईँ भँवरिया छिमा, जहँ अमी नहानी हो ॥ ५ ॥
सतईँ भँवरिया साहिब मिले, मिटि आवा जानी हो ।
प्रेम मगन भइ भाँवर, उठत धुन तानी हो ॥ ६ ॥
सतगुर गाँठि प्रेम की, छोड़ि ना छूटै हो ।
लागि रहो गुरु ज्ञान, डोरि ना टूटै हो ॥ ७ ॥
दास कबीर कै मंगल, जो कोइ गावै हो ।
बसै सत लोक मेँ जाइ, अमर पद पावै हो ॥ ८ ॥

(७)

मानुष जन्म अमोल, सुकृत कौ धाइये ।
सुरति कुवारी कन्या, हंसा सँग ब्याहिये ॥ १ ॥
सतगुरु विप्र बुलाइ के, लगन धराइये ।
वेगै कन्या बराइ, विलँब ना लाइये ॥ २ ॥
पाँच पचीस तरुनिया[1], तौ मंगल गाइये ।
चौरासी के दुक्ख, बहुरि ना लाइये ॥ ३ ॥
सुरति पुरुष सँग बैठि, हाथ दोउ जोरिये ।
जम से तिनुका तोरि, भँवरि भल फेरिये ॥ ४ ॥
सुरति कियो है सिंगार, पिया पहँ जाइये ।
जनम करम के अंक, सो तुरत मिटाइये ॥ ५ ॥
हंसा कियो है विचार, सुरति सों अस कही ।
जुग जुग कन्या कुँवारि, एतक दिन कहँ रही ॥ ६ ॥
सुरति कियो है प्रनाम, पिया तुम सत कही ।
सतगुरु कन्या कुँवारि, एतक दिन तहँ रही ॥ ७ ॥
प्रेम पुरुष कै साज, अखँड लेखा नहीं ।
अमृत प्याला पियै, अधर महँ झूलही ॥ ८ ॥
पान पर्वाना पाय, तौ नाम सुनावही ।
सतगुरु कहैं कबीर, अमर सुख पावही ॥ ९ ॥

(८)

आजु लगे पुनवासी, तो मंगल गाइये ।
बस्तर सेत आनि के, चँदवा तनाइये ॥ १ ॥
प्रेम के मंदिल झारि, चँदन छिरकाइये ।
सतगुरु पूरा होय, तो चौक पुराइये ॥ २ ॥
जाजिम गद्दी विछाइ के, तकिया सजाइये ।
गुरु के चरन पखारि, तो आसन कराइये ॥ ३ ॥

(१) युवा स्त्री ।

गज मोती मँगवाइ के, चौक पुराइये ।
ता पर मेवा मिष्टान्न, तो पान चढ़ाइये ॥ ४
पल्लौ सहित तहँ कलस, तो आनि धराइये ।
पाँच जोति के दीपक, तहवाँ बराइये ॥ ५
जल थल सील सुधारि, तो जोति जगाइये ।
साध संत मिलि आइ के, आरति उतारिये ॥ ६
ताल मृदंग बजाइ, तो मंगल गाइये ।
आरति करु पुनवार्मी, तो नरियर मोरिये ॥ ७
जम सों तिनुका तोरि, तो फंद छुड़ाइये ।
पुरुष को भोग लगाइ, हंसा मिलि पाइये ॥ ८
जुग जुग छुधा बुझाइ के, गुरु को मनाइये ।
कहैं कबीर सत भाव, सो लोक सिधाइये ॥ ९

(९)

सतगुरु जौहरि आय, तो मानिक लाइया ।
काया नगर मँझारि, बजार लगाइया ॥ १
चहुँ मुख लागि दुकान, तो झिलिमिलि ह्वै रहे ।
पारख सौदा बिसाहि[1], अधर डोरि झुलि रहे ॥ २
जिन जिन हंसा गाहक, वस्तु बिसाहिया ।
पाया सब्द अमोल, बहुरि नहिं आइया ॥ ३
बारहबानी[2] के ज्ञान, तो सोई सुरंग है ।
निर्गुन सब्द अमोल, साहिब को अंग है ॥ ४
करि ले सोरहो सिंगार, तो पिया को रिझाइये ।
दिल बिच दास कबीर, हंसा समुझाइये ॥ ५

(१) मोल ले। (२) खालिस सोना।

(१०)

साहिब को नाम अखंड, और सब खंड है ।
खंड है मेरु सुमेरु, खंड ब्रह्मंड है ॥ १ ॥
नारी सुत धन धाम, सो जीवन बंध है ।
लख चौरासी जीव, परे जम फंद है ॥ २ ॥
चंचल मन करु थीर, तबै भल रंग है ।
उलटि निरंतर पीव, तो अमृत संग है ॥ ३ ॥
जिन कै साहिब से नेह, सोई निरबंध है ।
उन साधन के संग, सदा आनंद है ॥ ४ ॥
दया भाव चित राखु, भक्ति को अंग है ।
कहैं कबीर चित चेतो, जक्त पतंग है ॥ ५ ॥

(११)

[पंचायन मगल]

सत्त सुकृत सत नाम को, आदि मनाइये ।
सुर्त जोग-संतायन[1], निसि दिन ध्याइये ॥
सतगुरु चरन मनाय, परम पद पाइये ।
करि दंडवत प्रनाम, तो मंगल गाइये ॥
गावै जो मंगल कामिनी, जहँ सत्त सीतल थान है ।
परम पावन ठाम अविचल, जहँ ससि सुरज की खान है ॥
मानिक पुर इक गाँव अविचल, जहँ न रैन विहानि है ।
कहैं कबीर सो हंस पहुँचे, जो सत्त नामहिँ जानि है ॥ १ ॥
अष्ट खंड जहँ कामिनि, आरति साजहीँ ।
चार भानु की सोभा, अंग विराजहीँ ॥
दृष्टि भाव जहँ होत, हंस सुख पावहीँ ।
हंसन हंस विलास, कामिनि सन्ति[2] मानहीँ ॥

(१) कबीर साहिब । (२) प्रीति भाव ।

गज मोती मँगवाइ के, चौक पुराइये।
ता पर मेवा मिष्टान्न, तो पान चढ़ाइये ॥ ४ ॥
पल्लो सहित तहँ कलस, तो आनि धराइये।
पाँच जोति कै दीपक, तहवाँ बराइये ॥ ५ ॥
जल थल सील सुधारि, तो जोति जगाइये।
साध संत मिलि आइ के, आरति उतारिये ॥ ६ ॥
ताल मृदंग बजाइ, तो मंगल गाइये।
आरति करु पुनवार्मी, तो नरियर मोरिये ॥ ७ ।
जम सों तिनुका तोरि, तो फंद छुड़ाइये।
पुरुष को भोग लगाइ, हंसा मिलि पाइये ॥ ८ ।
जुग जुग छुधा बुझाइ के, गुरु को मनाइये।
कहैं कबीर सत भाव, सो लोक सिधाइये ॥ ९ ।

(९)

सतगुरु जौहरि आय, तो मानिक लाइया।
काया नगर मँझारि, बजार लगाइया ॥ १ ।
चहुँ मुख लागि दुकान, तो झिलिमिलि ह्वै रहे।
पारख सौदा बिसाहि[1], अधर डोरि झुलि रहे ॥ २ ।
जिन जिन हंसा गाहक, वस्तु बिसाहिया।
पाया सब्द अमोल, बहुरि नहिं आइया ॥ ३ ।
बारहबानी[2] के ज्ञान, तो सोई सुरंग है।
निर्गुन सब्द अमोल, साहिब को अंग है ॥ ४ ।
करि ले सोरहो सिंगार, तो पिया को रिझाइये।
दिल बिच दास कबीर, हंसा समुझाइये ॥ ५ ।

---

(१) मोल ले। (२) खालिस सोना।

(१०)

साहिब को नाम अखंड, और सब खंड है।
खंड है मेरु सुमेरु, खंड ब्रह्मंड है॥ १॥
नारी सुत धन धाम, सो जीवन बंध है।
लख चौरासी जीव, परे जम फंद है॥ २॥
चंचल मन करु थीर, तवै भल रंग है।
उलटि निरंतर पीव, तो अमृत संग है॥ ३॥
जिन कै साहिब से नेह, सोई निरबंध है।
उन साधन के संग, सदा आनंद है॥ ४॥
दया भाव चित राखु, भक्ति को अंग है।
कहैं कबीर चित चेतो, जक्त पतंग है॥ ५॥

(११)

[पंचायन मंगल]

सत्त सुकृत सत नाम को, आदि मनाइये।
सुर्त जोग-संतायन[१], निसि दिन ध्याइये॥
सतगुरु चरन मनाय, परम पद पाइये।
करि दंडवत प्रनाम, तो मंगल गाइये॥
गावै जो मंगल कामिनी, जहँ सत्त सीतल थान है।
परम पावन ठाम अविचल, जहँ ससि सुरज की खान है॥
मानिक पुर इक गाँव अविचल, जहँ न रैन विहानि है।
कहैं कबीर सो हंस पहुँचे, जो सत्त नामहिँ जानि है॥ १॥
अष्ट खंड जहँ कामिनि, आरति साजहीँ।
चार भानु की साभा, अंग विराजहीँ॥
दृष्टि भाव जहँ होत, हंस सुख पावहीँ।
हंसन हंस विलास, कामिनि सत्ति[२] मानहीँ॥

(१) कबीर साहिब। (२) प्रीति भाव।

सचि मानि कामिनि सुक्ख, हंसा आगे को पग धारहीँ ।
सुख सागर सुख बास में, जहँ सुकृत दरस निहारहीँ ॥
पतित-पावन भये हंसा, काया सोरह भान है ।
कहैँ कबीर सो हंस पहुँचे, जो सत्त नामहिँ जानि है ॥ २ ॥

सुख सागर की सोभा, कहा बिसेखिये ।
कोटिन रबि चहुँ ओर, उदय तहँ पेखिये ॥
धरनि अकास जहाँ नहिँ, हीरा जगमगै ।
उहवाँ दीनदयाल, हंस के सँग लगै ॥

सँग लागि उहवाँ हंस के, कहै तुम हमें भल चीन्ह हो ॥
अंबु करि सो दीप दिखावोँ, प्रथम पुर्ष जो कीन्ह हो ।
असंख्य रबि औ कोटि दामिनी, पुहुप सेज अरघान[१] है ॥
कहैँ कबीर सो हंस पहुँचे, जो सत्त नामहिँ जानि है ॥ ३ ॥

आदि अंत जोग-जीत, हंस के सँग लगे ।
पंकज[२] करिय अँजोर, होत साहिब मिले ॥
दोउ कर जोरि मनाय, बहुत बिनती करी ॥
साहिब दरसन देव, हंस सरधा धरी ॥

दया कीन्हा पुर्ष बिहँसे, मस्तक दरस दिखाइ हो ।
अमृत फल जब चार दीन्हा, सकल हंस मिलि पाइ हो ॥
अटल काया जब भई, मंजिल[३] करी अस्थान है ।
कहैँ कबीर सो हंस पहुँचे, जो सत्त नामहिँ जानि है ॥४॥

सदा बसंत जहँ फूलो, कुञ्ज सुहावहीँ ।
अछै बृच्छ तर हंसा, सेज बिछावहीँ ॥
चहुँ दिसि हंस की पाँती, हीरा जगमगै ।
सोरह रवि को रूप, अंग में चमकहीँ ॥

---

(१) अति सुगंधित । (२) कँवल । (३) ठिकाना ।

अंग हंसा चमक सोभा, सुर सोरह पावहीं।
धन सतगुरू को सार वीरा, पुर्ष दरस दिखावहीं॥
हंस सुजन जन अंस भेंटे, हंस को पहिचानि है।
कहैं कबीर सो हंस पहुँचे, जो सत्त नामहिं जानि है॥ ५॥

(१२)

[वेदी]

लगन लगी सत लोक, सुकृत मन भावहीं।
सुफल मनोरथ होय, तो मंगल गावहीं॥ १॥
चलु सखि सुरति संजोय, अगम घर उठि चलो।
हंस सरूप सँवारि, पुरुष सों तुम मिलो॥ २॥
कनक पत्र पर अंक, अनूपम अति कियो।
तुमहिं सकल संदेस, लगन पिय लिख दियो॥ ३॥
लिखि दियो सब्द अमोल, सोहंग सुहावता।
पूरन परम-निधान, ताहि बल जम जिता॥ ४॥
तत करनी कर तेल, हरदि हित लावहीं।
कंकन नेह बँधाय, मधुर धुन गावहीं॥ ५॥
अच्छत थार भराय, तो चौक पुरावहीं।
हीरा हंस विठाय, तो सब्द सुनावहीं॥ ६॥
कंचन खंभ अँजोर, अधर चारो जुगा।
बाजत अनहद तूर, सेत मंडप छजा॥ ७॥
अगर अमी भरि कुम्भ, रतन चौरी रची।
हंस पढ़ैं तहँ सब्द, मुक्ति वेदी रची॥ ८॥
हस्त लिये सत केल, ज्ञान गढ़ बंधना।
मोच्छ सरूपी मौर, सीस सुन्दर बना॥ ९॥

सुरति पुरुष सों मेल, तो भाँवरि परि गई।
अमर तिलक ताम्बूल, सुघर माला दई ॥ १०॥
दीन्हो सुरति सुहाग, पदारथ चारि को।
निस दिन ज्ञान बिचार, सब्द निर्वार को ॥ ११॥
यह मंगल सत लोक के, हंसा गावहीं।
कहैं कबीर समुझाय, बहुरि नहिं आवहीं ॥ १२॥

॥ राग गारी ॥

सतगुरु साहिब पाहुन आये, का ले करों मेहमानी जी ॥ १ ॥
निरति के गेंडुवा गँगाजल पानी, परसे सुमति सयानी जी ॥ २ ॥
प्रथम लालसा लुचई[1] आई, जुगत जलेबी आनी जी ॥ ३ ॥
भाव कि भाजी सील कि सेमा, बने कराल करेला जी ॥ ४ ॥
हिय कै हींग हृदय कै हरदी, तत्त के तेल बघारे जी ॥ ५ ॥
डारे धोइ बिचार के जल से, करमन कै करुवाई जी ॥ ६ ॥
यह जेवनार रच्यो घट भीतर, सतगुरु न्योति बुलाये जी ॥ ७ ॥
जेवन बैठे साहिब मोरे, उठत प्रेम रस गारी जी ॥ ८ ॥
कहैं कबीर गारी की महिमा, उपमा बरनि न जाई जी ॥ ९ ॥

(२)

जो तूँ अपने पिय की प्यारी, पिया कारन सिंगार करो ॥ टेक॥
जा के जुगुत की ककही, करम केस निरुवार करो।
जा के तत के तेल, प्रेम कि डोरी से चोटी गुहो ॥ १ ॥

(१) पूरी।

जा के अलख के काजर, विरह कि बेंदी लिलार दई ।
जा के नेह नथुनिया, गुंज कै लटकन झूलि रहे ॥ २ ॥
जा के सुमति के सूत, दया हमेल हिये माहिँ परी ।
जा के चित की चौकी, अकिल के कँगना झलकि रहे ॥ ३ ॥
जा के चोप की चुनरी, ज्ञान पछेली चमक रही ।
जा के तिल के छल्ले, सब्द के बिछुवा बाजि रहे ॥ ४ ॥
तुम एतन धनि पहिरो, रूसल पिया के मनाइ लई ।
उठि के चलो सुहागिनि, निरखत बदन हुलास भरी ॥ ५ ॥
पिय तुम मो तन हेरो, मैं हौं दासी तुम्हार खड़ी ।
गारी गावैं कबीरा, साधो सुनो बिचार धरी ॥ ६ ॥

(३)

[नरियर मोरन]

बनजारिन बिनती करै, सुन साजना ।
नरियर लीन्हो हाथ, संत सुन साजना ॥ १ ॥
विना बीज को बृच्छ है, सुन साजना ।
विना धरती अंकूर, संत सुन साजना ॥ २ ॥
ता को मूल पताल है, सुन साजना ।
नरियर सीस अकास, संत सुन साजना ॥ ३ ॥
विना सब्द जिनि मोरहू, सुन साजना ।
जीव एकोतर हानि, संत सुन साजना ॥ ४ ॥
गुरु के सब्द ले मोरहू, सुन साजना ।
फूटै जम को कपार, संत सुन साजना ॥ ५ ॥
सखियाँ पाँच सहेलरी, सुन साजना ।
नौ नारी विस्तार, संत सुन साजना ॥ ६ ॥

कहैं कबीर बघेल[1] सोँ, सुन साजना ।
रानी इन्द्रमती सरदार, संत सुन साजना ॥ ७ ॥

॥ राग झूलना ॥

(१)

करेगा सोई करता ने हुकुम किया,
सब्द का संग समसेर बंका ।
ज्ञान का चौँर ले प्रेम का पंखा ले,
खैँच के तेग छोड़ाव संका ॥ १ ॥
कड़ी कमान जब ऐँठि के खैँचिया,
तीन बेर टनकार सहज टंका ।
मगन मुसक्यात गगन में कूदिया,
ढील कर बाग मैदान हंका ॥ २ ॥
पाँच पच्चीस औ तीन भागा फिरै,
बड़े सहुकार औ राव रंका ।
कहैं कबीर कोउ संत जन जौहरी,
बड़े मैदान मोँ दियो डंका ॥ ३ ॥

(२)

खुदी को छाड़ि खुदाय को याद कर,
वो खुदाय क्या दूर है जी ॥ १ ॥
खुद बोलते को तहकीत[2] करि ले,
हर दम हजूर जरूर है जी ॥ २ ॥

---

(१) बघेलखंड के निवासी धर्म्मदास जी । (२) तहकीक ।

ठौर ठौर क्या भटकत फिरो,
करो गौर तुम हीं में नूर है जी ॥ ३ ॥
कबीर का कहना मानि ले अब,
परवाना सहित मंजूर है जी ॥ ४ ॥

(३)

चलु रे जीव जहँ हंस को देस है,
बसत कबीर आनंद सोई ।
काल पहुँजे नहीं सोग व्यापै नहीं,
रहैगा हंस तहँ संग होई ॥ १ ॥
यह परपंच है सकल जाहि को,
ता में रहे का पार पावै ।
कठिन दरियाव जहँ जीव सब बाझिया,
माया रूप धरि आपैखेलावै ॥ २ ॥
[तहँ] खेलावै सिकार जम त्रिगुन के फंद में,
बाँधि के लेत सब जीव मारी ।
मोह क रूप तहँ नारि इक ठाढ़ि है,
जहाँ तुम जाहु तहँ मारि डारी ॥ ३ ॥
तेहि देखि सब जीव जल के सरूप भे,
तदपि परतीत कोई नाहिं पाई ।
कहैं कबीर परतीत कर सब्द की,
काम औ क्रोध कमान तोरी ॥ ४ ॥

॥ राग कहरा ॥

(१)

सुनो सयानी अकथ कहानी, गुरु अपने का सनेसा हो ॥ १ ॥
जो पिय मारै औ झकझारै, बाहर पगु ना दीन्हा हो ॥ २ ॥

निरत पिया को अंतर ता को, सब्द नेह ना छूटै हो ॥ ३ ॥
जैसे डोरी उड़ै अकासा, सब्द डोरि नहिं टूटै हो ॥ ४ ॥
डोरी टूटै खसै भूमि पर, तब पिय बाद गँवावा हो ॥ ५ ॥
सिर पर गागर बात सखिन सों, चित से गगर न छूटै हो ॥ ६ ॥
दास कबीर के निर्गुन कहरा, महरम होय सो बूझै हो ॥ ७ ॥

(२)

बिमल बिमल अनहद धुनि बाजै.
समुझि परै जब ध्यान धरै ॥ टेक ॥
कासी जाइ कर्म सब त्यागै,
जरा मरन से निडर रहै ।
बिरले समुझि परै वह गलिया,
बहुरि न प्रानी देह धरै ॥ १ ॥
किंगरी संख झाँझ डफ बाजै,
अरुझा मन तहँ ख्याल करै ।
निरंकार निरगुन अबिनासी,
तीन लोक उँजियार करै ॥ २ ॥
इँगला पिंगला सुखमन सोधो,
गगन मँदिल में जोति बरै ।
अष्ट कँवल द्वादस के भीतर,
वहँ मिलने की जुगत करै ॥ ३ ॥
जीवन मुक्ति मिले जेहि सतगुरु,
जन्म जन्म के पाप हरै ।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो,
धिरज बिना नर भटकि मरै ॥ ४ ॥

॥ दस मुक़ामी रेख़्ता ॥

चला जब लोक को सोक सब त्यागिया ।
हंस को रूप सतगुरु बनाई ॥
भृंग ज्यों कीट को पलटि भृंगै किया,
आप सम रङ्ग दै लै उड़ाई ॥ १ ॥
छोड़ि नासूत मलकूत को पहुँचिया,
विस्नु की ठाकुरी दीख जाई ।
इन्द्र कुबेर रंभा जहाँ नृत करैं,
देव तेंतीस कोटिक रहाई ॥ २ ॥
छोड़ि वैकुंठ को हंस आगे चला,
सून्य में जोत जगमग जगाई ।
जोति परकास में निरखि निःतत्व को,
आप निर्भय भया भय मिटाई ॥ ३ ॥
अलख निर्गुन जेही वेद अस्तुति करै,
तीनहूँ देव को है पिताई ।
भगवान तिन के परे सेत मूरत धरे,
भग की आनि तिनको रहाई ॥ ४ ॥
चार मोकाम पर खंड सोरह कहे,
अंड को छोर ह्याँ तें रहाई ।
अंड के परे अस्थान आचिंत को,
निरखिया हंस जब उहाँ जाई ॥ ५ ॥
सहस औ द्वादसो रूह है संग में,
करत किल्लोल अनहद बजाई ।

---

(१) क़दर ।

तासु के बदन की कौन महिमा कहौं,
भासती देंह अति नूर छाई ॥ ६ ॥
महल कंचन बने मनी ता में जड़े,
बैठ तहँ कलस अखंड छाजे ।
अचिंत के परे अस्थान सोहंग का,
हंस छत्तीस तहवाँ विराजे ॥ ७ ॥
नूर का महल औ नूर की भूमि है,
तहाँ आनन्द सों दुंद भाजे ।
करत किलोल बहु भाँति से संग इक,
हंस सोहंग के जो समाजे ॥ ८ ॥
हंस जब जात षट चक्र को वेधि के,
सात मोकाम में नजर फेरा ।
परे सोहंग के सुरति इच्छा कही,
सहस बावन जहाँ हंस हेरा ॥ ९ ॥
रूप की रासि[1] तें रूप उन को बनो,
नाहिँ उपमाहिँ दूजी निबेरा ।
सुर्त से भेँट के सब्द की टेक चढ़ि,
देखि मोकाम अंकूर केरा ॥ १० ॥
सून्य के बीच में बिमल बैठक तहाँ,
सहज अस्थान है गैब केरा ।
नवो मोकाम यह हंस जब पहुँचिया,
पलक बिलंब ह्वाँ कियो डेरा ॥ ११ ॥
तहाँ से डोरिमक[2] तार ज्यौं लागिया,
ताहि चढ़ि हंस गौ दै दरेरा ।

---

(१) ढेर । (२) मकड़ी ।

भये आनन्द सों फन्द सब छोड़िया,
पहुँचिया जहाँ सतलोक मेरा ॥ १२ ॥
हंसनी हंस सब गाय बजाय के,
साजि के कलस वोहि लेन आये।
जुगन जुग बीछुरे मिले तुम आइ के,
प्रेम करि अंग सों अंग लाये ॥ १३ ॥
पुरुष ने दरस जब दीन्हिवा हंस को,
तपनि बहु जन्म की तब नसाये।
पलटि के रूप जब एक सों कीन्हिया,
मनहुँ तब भानु षोड़स उगाये ॥ १४ ॥
पुहुप के दीप पियूष भोजन करै,
सब्द की देह जब हंस पाई।
पुष्प के सेहरा हंस औ हंसिनी,
सच्चिदानन्द सिर छत्र छाई ॥ १५ ॥
दिपै बहु दामिनी दमक बहु भाँति की,
जहाँ घन सब्द की घुमड़ लाई।
लगे जहँ बरसने गरज घन घोर के,
उठत तहँ सब्द धुनि अति सुहाई ॥ १६ ॥
सुनैं सोइ हंस तहँ जुत्थ के जुत्थ है,
एक ही नूर इक रंग रागे।
करत बिहार मन भावनी मुक्ति में,
कर्म औ भर्म सब दूरि भागे ॥ १७ ॥
रंग औ भूप कोइ परखि आवै नहीं,
करत किलोल बहु भाँति पागे।

काम औ क्रोध मद लोभ अभिमान सब,
छाड़ि पाखंड सत सब्द लागे ॥ १८ ॥
पुरुष के बदन की कौन महिमा कहौं,
जगत में उभय[1] कछु नाहिं पाई ।
चन्द्र औ सूर गन जोति लागै नहीं,
एकहू नख की परकास भाई ॥ १६ ॥
पान परवान जिन बंस का पाइया,
पहुँचिया पुरुष के लोक जाई ।
कहैं कबीर यहि भाँति सों पाइ हौ ।
सत्त की राह सो प्रगट गाई ॥ २० ॥

॥ राग जँतसार[2] ॥

(१)

सुरति मकरिया[3] गाड़हु हे सजनी—अहे सजनी ।
दूनों रे नयनवाँ जोतिया लावहु रे की ॥ १ ॥
मन धरु मन धरु मन धरु हे सजनी—अहे सजनी ।
अइसन समइया फिरि नहिं पावहु रे की ॥ २ ॥
दिन दस रजनी हे सुख करु सजनी—अहे सजनी ।
इक दिन चाँद छपायल रे की ॥ ३ ॥
सँगहिं अछत पिय भरम भुलइली—अहे सजनी ।
मोरे लेखे पिया परदेसहिं रे की ॥ ४ ॥
नव दस नदिया अगम बहे सोतिया हो—अहे सजनी ।
विचहिं पुरइनि[4] दह[5] लागल रे की ॥ ५ ॥

---

(१) दूसरा अर्थात सदृश । (२) जाँता या चक्की पर गाने की गीत । (३) चक्की का खीला । (४) कोईं । (५) तलाव ।

फुल इक फुलले अनुप फुल सजनी–अहे सजनी।
तेहि फुल भँवरा लुभाइल रे की ॥ ६ ॥
सब सखि हिलि मिलि निज घर जाइब–अहे सजनी।
समुँद लहरिया समाइब रे की ॥ ७ ॥
दास कबीर यह गवलैं लगनियाँ हो–अहे सजनी।
अब तो पिया घर जाइब रे की ॥ ८ ॥

(२)

अपने पिया की मैं होइबौं सोहागिनी–अहे सजनी।
भइया तजि सइयाँ सँग लागब रे की ॥ १ ॥
सइयाँ के दुअरिया अनहद बाजा बाजै–अहे सजनी।
नाचहिँ सुरति सोहागिनि रे की ॥ २ ॥
गंग जमुन के औघट घटिया हो–अहे सजनी।
तेहि पर जोगिया मठ छावल रे की ॥ ३ ॥
देहौं सतगुरु सुर्ती के बिरवा हो–अहे सजनी।
जोगिया दरस देखे जाइब रे की ॥ ४ ॥
दास कबीर यह गवलैं लगनियाँ हो–अहे सजनी।
सतगुर अलख लखावल रे की ॥ ५ ॥

॥ राग बसंत ॥

खेलत सतगुरु ऋतु बसंत। मुक्ति पदारथ मिले कंत ॥ टेक ॥
धरती रथ चढ़ि देखो देस। घर घर निरखो नृप नरेस ॥ १ ॥
जोजन चार पेतरे फेर। बाँधि मवासी गढ़ मैं घेर ॥ २ ॥
अधर निअच्छर गहो ढाल। भागि चलै जब धरो काल ॥ ३ ॥
सर[1] सुधारि घट कर कमान। चंद चिला[2] गहि मारो बान ॥ ४ ॥

---

(१) तीर। (२) चिल्ला=कमान की डोर।

साधु संग रन करो जोर । तब घट छोड़ै चतुर चोर ॥ ५ ॥
ऐसी विधि से लड़ै सूर । काल मवासी होय दूर ॥ ६ ॥
अधर निअच्छर गहो डोर । जो निज मानो बचन मोर ॥ ७ ॥
धरती तुरँग[1] होय असवार । कहै कबीर भव उतरो पार ॥ ८ ॥

॥ राग होली ॥

(१)

सतगुरु दीन-दयाल पिरीतम पाइया ॥ टेक ॥
बंदीछोर मुक्ति के दाता, प्रेम सनेही नाम ।
साध संत के बसी अभिलाषा, सब विधि पूरन काम ॥ १ ॥
जैसे चात्रिक स्वाँती जल को, रटतु है आठो जाम ।
ऐसी सुरति लगी जिन सतगुरु, सो पाये सुख धाम ॥ २ ॥
आनँद मंगल प्रेम चारि[2] गुरु, अमर करत हैं जीव ।
सुमिरन दे सतलोक पठाये, ऐसे समरथ पीव ॥ ३ ॥
चरन कमल सतगुरु की सेवा, मन चित गहु अनुराग ।
कहैं कबीर अस होरी खेलै, जा के पूरन भाग ॥ ४ ॥

(२)

ऐसी होरी खेल, जा में हुरमत लाज रहो री ॥ टेक ॥
सील सिँगार करो मोर सजनी, धीरज माँग भरो री ।
ज्ञान गुलाल लगावो सजनी, अगम घर सूझि परो री ॥ १ ॥
उठत धमार काया गढ़ नगरी, अनहद बेनु बजो री ।
फगुवा खेलूँ अपने साहिब सँग, हिरदे साँच धरो री ॥ २ ॥
खेती करो जग आइ के साधो, चेला सिष न बटोरी ।
नइया अपने पार उतरन को, सतगुरु दया करो री ॥ ३ ॥
मने मने की सिर पर मेटुकी, नाहक बोझ मरो री ।
मेटुकि उतारि मिलो तुम पिय सों, सत्त कबीर कहो री ॥ ४ ॥

---

(१) घोड़ा । (२) आचार्य ।

(३)

माया भ्रम भारी सगरो जग जीति लियो ॥ टेक ॥
गज गामिनि कठोर है माया, संसय कीन्ह सिँगारा ।
लै के डारै मोह नदी मेँ, कोइ न उतरै पारा ॥ १ ॥
निज आँखिन मेँ अंजन दीन्हा, पंडित आँखि मेँ राई ।
जोगी जती तपी सन्यासी, सुर नर पकरि नचाई ॥ २ ॥
गोरख दत्त बसिष्ट व्यास मुनि, खेलन आये फागा ।
सिंगी ऋषि पारासर आये, छोड़ि छोड़ि वैरागा ॥ ३ ॥
सात दीप और नवो खंड मेँ, सब से फगुवा लीन्हा ।
ठाढ़ कबीर सोँ अरज करतु है, तुमहीँ ना कछु दीन्हा ॥ ४ ॥

(४)

खेलो खेलो सोहागिनि होरी ।
चरन सरोज[1] पिया हित जानो, रज कै केसर घोरी ॥ १ ॥
सोहँग नारि जहँ रंग रचो है, चित्र मेँ सुखमन जोरी ।
सदा सजीवन प्रेम पिया को, गहि लीजे निज डोरी ॥ २ ॥
लिये लकुट कर बरन विचारो, प्रेम प्रीति रँग बोरी ।
रँग अनेक अनुभव गहि राचो, पिय के पाँव परो री ॥ ३ ॥
कहैँ कबीर अस होरी खेलो, कोई नहिँ भकझोरी ।
सतगुरु समरथ अजर अमर हैं, तिन के चरन गहो री ॥ ४ ॥

॥ राग दादरा ॥

(१)

बलम सँग सोइ गइ दोइ जनी ॥ टेक ॥
इक ब्याही इक अरधी[2] कहावे, दूनौँ सुभग सुहाग भरी ॥ १ ॥
ब्याही तो उजियार दिखावे, अरधी ले अँधियार खड़ी ॥ २ ॥
ब्याही ते सुख निंदिया सोवे, अरधी दुख सुख माथ धरी ॥ ३ ॥
कह कबीर सुनो भाइ साधो, दूनौँ पिया पियारि रहीँ ॥ ४ ॥

---

(१) कमल । (२) धरूआ, सुरतिन ।

(५)

रमैया की दुलहिन ने लूटा बजार ॥ टेक ॥
सुरपुर लूटा नागपुर लूटा, तिन लोक मचि गइ हाहाकार ॥ १ ॥
ब्रह्मा लूटे महादेव लूटे, नारद मुनी के परी पिछार[1] ॥ २ ॥
स्त्रिंगी की मिंगी करि डारी, पारासर के उदर बिदार ॥ ३ ॥
कनफूँका चिदाकासी लूटे, जोगेसुर लूटे करत बिचार ॥ ४ ॥
हम तो बचि गये साहिब दया से, सब्द डोर गहि उतरे पार ॥ ५ ॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, इस ठगनो से रहो हुसियार ॥ ६ ॥

ककहरा

[क] काया कुंज करम की बाड़ी, करता बाग लगाया।
किनका ता में अजर समाना, जिन बेली फैलाया ॥
पाँच पचीस फूल तहँ फूले, मन अलि[2] ताहि लुभाया।
वोहि फूलन के बिषै लपटि रस, रमता राम भुलाया ॥
मन भँवरा यह काल है, बिषै लहरि लपटाय।
ताहि संग रमता बहै, फिरि फिरि भटका खाय ॥ १ ॥
[ख] खालिक की तो खबर नहीं कछु, खाब ख्याल में भूला।
खाना दाना जोड़ा घोड़ा, देखि जवानी फूला ॥
खासा पलंग सेजबँद तकिया, तोसक फूल बिछाया।
नवल नारि लै ता पर पौढ़ा, काम लहर उमड़ाया ॥
लागी नारी प्यारि अति, छुटा धनी सोँ नेह।
काल आय जब ग्रासिहै, खाक मिलेगी देह ॥ २ ॥
[ग] गुरू कीजिये निरखि परखि कै, ज्ञान रहनि का सूरा
गर्व गुमान माया मद त्यागे, दया छिमा सत पूरा ॥

---

(१) पीछे। (२) भँवरा।

गैल बतावै अमर लोक की, गावै सतगुरु बानी।
गज मस्तक अंकुस गहि बैठे, गुरुवा गुन गलतानी ॥
पाप पुन्य की आस नहिं, करम भरम से न्यार।
कृतृम पाखँड परिहरे, अस गुरु करो बिचार ॥ ३ ॥
[घ] घट गुरु ज्ञान बिना अँधियारा, मोह भरम तम छाया।
सार असार विचारत नाहीं, अमी धोख बिष खाया ॥
घर का घिर्त रेत में डारै, छाछ ढूँढ़ता डोलै।
कंचन देके काँच बिसाहै[1], हरू गरू[2] नहिं तोलै ॥
ज्ञान बिना नर बावरा, अंध कूर मतिहीन।
साँच गहै नहिं परखि कै, झूठै के आधीन ॥ ४ ॥
[ङ] डंभ मनै मत मानियो, सत्त कहौं परमारथ जानी।
उपजै सुख तव हृदय तुम्हारे, जब परखो मम बानी ॥
ऊँचा नीचा कोइ नहीं रे, करम कहावै छोटा।
जासु के अंदर करकै नखरा, सोई माल है खोटा ॥
ऊपर जटा जनेऊ पहिने, माला तिलक सुहाय।
संसय सोक मोह भ्रम अंदर, सकलै में रहु छाय ॥ ५ ॥
[च] चित से चेतहु चतुर चिकनियाँ, चैन कहा तुम सोया।
चतुराई सब भाड़ परैगी, जन्म अचेते खोया ॥
चौथा पन तेरा अब लागा, अजहुँ चेत गुरु ज्ञान।
नहिं तो परैगा घोर अँधेरा, फिरि पाछे पछितान ॥
ऐसे पाटन आइके, सौदा करो बनाय।
जो चूको तुम जन्म यह, तो दुख भुगतो जाय ॥ ६ ॥
[छ] छन में छल बल सब निकसत हैं, जब जम छेंके आई।
छटपट करिहो विष ज्वाला तें, तब कहु कौन सहाई ॥

(१) मोल ले। (२) हल्का भारी।

जम का मुगदर ऊपर बरसै, तब को करै उबारी ।
तात मातु भ्राता सुत सज्जन, काम न आवै नारी ॥
छूट्यो सर्ब सगाई, भया चोर का हाल ।
संगी सब न्यारे भये, आप गये मुख काल ॥ ७ ॥

[ज] जम के पाले पड़ै जीव, तब कछू बात नहिं आवै ।
जोर कछू काबू नहीं, सिर धुनि धुनि पछितावै ॥
जब ले पहुँचावैं चित्रगुप्त पहँ, लिखनी लिखै बिचारि ।
दयाहीन गुरुबिमुखी ठहरै, अग्नि कुंड लै डारि ॥
जन्म सहस अजगर को पावै, विष ज्वाला अकुलाय ।
ता पाछे कृमि विष्टा कीन्हा, भूत खानि को जाय ॥ ८ ॥

[झ] झंखन झुरवन सबही छोड़ो, झमकि करो गुरु सेव ।
झाँई मन की दूर करो अब, परखि सब्द गुरु देव ॥
झगरा झूठ झाल झल त्यागो, झटक भजो सतनाम ।
झीन करो मन मेलो मंदिर, तब पावो बिस्राम ॥
होइ अधीन गुरु चरन गहु, कपट भाव करि दूर ।
पतिब्रता ज्यों पिव को चाहै, ताके न दूजा कूर ॥ ९ ॥

[ञ] इस्क बिना नहिं मिलिहै साहिब, केतो भेष
इस्क मासूक न छिपै छिपाये, केतो छिपै
इत उत इहाँ उहाँ सब छोड़ो, निःचल गहु
या से सुक्ख होय दुख नासै, मेटै
आदि नाम है जाहि पहँ, सोई गुरु
जे कृतृम कहँ ध्यावही, ते भव होय

[ट] टीम टाम बाहर बहुतेरे, दिल
करै आरती संख बाज धुनि, छुटै न
टिकुली सेंदुर टकुवा चरखा, दासी
कचे बचे ने माँगि मिठाई,

जिन सेवक पूजा दियो, ताहि दियो आसीस।
जहाँ नहीं कछु तहँ भे ठाढ़े, भस्म करैं जगदीस ॥ ११॥

[ठ] ठग वहुतेरे भेष बनावैं, गले लगावैं फाँसी।
स्वाँग वनाये कौन नफा है, जो न भजे अबिनासी ॥
ठोकर सहै गुरू के द्वारे, ठीक ठौर तब पावै।
ठकठक जन्म मरन का मेटै, जम के हाथ न आवै ॥
मृतक होय गुरु पद गहै, ठीस[1] करै सब दूर।
कायर तें नहिं भक्ति है, ठानि रहै कोइ सूर ॥ १२॥

[ड] डगमग तें तो काज सरै नहिं, अडिग नाम गुन गहिये।
डर मेटे तब विषम काल का, अछै अमर पद लहिये ॥
डरते रहिये गुरू साधु से, डम्भि काम नहिं आवै।
डिम्भी होय के भवसागर में, डहन मरन दुख पावै ॥
डेढ़ रोज का जीवना, डारो कुबुधि नसाय।
डेरा पावो सत्त लोक में, सतगुरु सब्द समाय ॥ १३॥

[ढ] ढूँढ़त जिसे फिरो सो ढिंग है, तेरा तैं उलटि निरेखो।
ढोल मारि के सबै चेतावौं, सतगुरु सब्द बिवेखो ॥
तुम हो कौन कहाँ तें आये, कहँ है निज घर तेरा।
केहि कारन तुम भरमत डोलो, तन तजि कहाँ बसेरा ॥
को रच्छक है जीव का, गहो ताहि पहिचानि।
रच्छक के चीन्हे विना, अंत होयगी हानि ॥ १४॥

[ण] निर्गुन गुनातीति अविनासी, दया-सिंधु सुख-सागर।
निःचल निःठौर निरवासी, नाम अनादि उजागर ॥
निरमल अमी कांति अद्भुत छवि, अकह अजावन[2] सोई।
नख सिख नाभि नयन मुख नासा, स्रवन चिकुर[3] सुभ होई ॥

(१) अकट। (२) विना जामन के। (३) बाल।

चिकुरन के उजियार तें, बिधु[1] कोटिक सरमाय।
कहा क्रांति छबि बरनौं, बरनत बरनि न जाय ॥१५॥
[त] ताहि पुरुष की अंस जीव यह, धर्मराय ठगि राखा।
तारन तरन आप कहलाई, बेद सास्त्र अभिलाखा॥
तत्त प्रकृति तिरगुन से बंधा, नीर पवन की बारी।
धर्मराय यह रचना कीन्ही, तहाँ जीव बैठारी॥
जीवहिं लाग ठगौरी, भूला अपना देस।
सुमिरन करही काल को, भुगतै कष्ट कलेस ॥१६॥
[थ] थकित होय जिव भरमत डोलै, चौरासी के माहीं।
नाना दुक्ख परै जम फाँसी, जरै मरै पछिताही॥
थाह न पावै बिपति कष्ट की, बूड़ै संसय धारा।
भवसागर की बिषम लहर है, सूझै वार न पारा।
तन बिलखै[2] अघ योनि में, पड़ै जीव बिकरार।
सतगुरु सब्द बिचार नहिं, कैसे उतरै पार ॥१७॥
[द] दुंद बाद है और देंह में, परिचै तहाँ न पावै।
नर तन लहि जो मोहिं गहै, तो जमके निकट न आवै॥
दरस कराओं सत्त पुरुष का, देंह हिरम्बर पाइहो।
सुख सागर सुख बिलसौ हंसा, बहुरि जोनि नहिं आइहो॥
अपना घर सुख छाड़ि के, अँगवै[3] दुख को भार।
कहाँ भरम बसि परे जिव, लखै न सब्द हमार ॥१८॥
[ध] धर्मराय को सबै पुकारै, धर्म चीन्ह न पावै।
धर्मराय तिहुँ लोकहिं ग्रासै, जीवहिं बाँधि झुलावै॥
धोखा दै सब को भरमावै, सुर नर मुनि नहिं बाचै।
नर वपुरे की कौन बतावै, तन धरि धरि सब नाचै॥

---
(१) चन्द्रमा। (२) बिलकै, रोवै। (३) सहै।

असुर होय सतावही. फिर रच्छक को भाव ।
रच्छक जानि के जपै जिव, पुनि वे भच्छ कराव ॥ १६॥
[न] निरभै निडर नाम लौ लावै, नकल चीन्हि परित्यागै ।
नाद विंद तेँ न्यार वतायो, सुरति सोहंगम जागै ।
निराधार निःतत्त्व निअच्छर, निःसंसय निःकामी ॥
निःस्वादी निर्लिप्त बियापित, निःचिंत अगुन सुख धामी ॥
नाम-सनेही चेतहू, भाखौँ घर की डोरि ।
निरखो गुरु गम सुरति सौँ, तव चलि तृन जम तोरि ॥२०॥
[प] पाप पुन्य मेँ जिव अरुझाना, पार कौन विधि पावै ।
पाप पुन्य फल भुक्तै तन धरि, फिर फिर जम संतावै ॥
प्रेम भक्ति परमातम पूजा, परमारथ चित धारै ।
पावन जन्म परसि पद पैहै, पारस सव्द बिचारै ॥
पीव पीव करि रटन लगावै, परिहरि कपट कुचाल ।
प्रीतम बिरह बिजोग जेहिँ, पाँव परै तेहिँ काल ॥२१॥
[फ] फरामोस[1] कर फिकर फेल वद, फहम करै दिल माहीँ ।
परफुल्लित सतगुरु गुन गावै, जम तेहि देखि डेराही ॥
फाजिल सो जो आपा मेटै, फना[2] होय गुरु सेवै ॥
फाँसी काटै कर्म भर्म की. सत्त सव्द चित देवै ॥
फिरै फिरै नर भरम वस, तीरथ माहिँ नहाय ।
कहा भये नर घोर के पीये, ओस तेँ प्यास न जाय ॥२२॥
[व] ब्रह्म विदित है सर्व भूत मेँ, दूसर भाव न होय ।
वर्त्तमान चित चेतै नाहीँ. भूत भविष्य विलोय ॥
वड़े पढ़े ते विषम वुद्धि लिये. वोलनहार न जोहैं[3] ।
ब्रह्म दुखित करि पाहन पूजे, वरवस आप विगोहैं[4] ॥

(१) भुलाकर । (२) मृतक । (३) खोजैं । (४) विगाड़ै ।

बन्दि परे नर काल के, बुद्धि ठगाइनि जानि ।
बन्दी छोरौं लैचलौं, जो मोहिं गहि पहिचानि ॥२३॥

[भ] भाड़ परे यह देस बिराना, भवसागर अवगाहा[१] ।
भक्त अभक्त सभन को बोरै, कोई न पावै थाहा ॥
भच्छक आप लीला बिस्तारा, कला अनंत दिखावै ।
भच्छक को रच्छक करि जानै, रच्छक चीन्हि न पावै ॥
भजे जाहि सो भच्छक, रच्छक रहा निनार ।
भर्म चक्र में परे जीव सब, लखै न सब्द हमार ॥२४॥

[म] मन मयगर[२] मद मस्त दिवाना, जीवहिं उलटि चलावै ।
अकरम करम करै मन आपहिं, पीछे जिव दुख पावै ॥
मोह बस जीव मनहिं नहिं चीन्हैं, जानै यह सुखदाई ।
मार परै तब मन ह्वै न्यारो, नरक परै जिव जाई ॥
मन गज अगुवा काल को, परखो संत सुजान ।
अंकुस सतगुरु ज्ञान है, मन मतंग भयमान[३] ॥२५॥

[य] जो जिव सतगुरु सब्द बिबेकै[४], तौ मन होवै चेरा ।
जुक्ति जतन से मन को जीतै, जियतै करै निबेरा ॥
जहँ लगि जाल काल बिस्तारा, सो सब मन की बाजी ।
मनै निरंजन धर्मराय है, मन पंडित मन काजी ॥
गुरु प्रताप भौ जोर जिव, निर्बल भौ मन चोर ।
तस्कर संधि न पावही, गढ़-पति जगै अँजोर ॥२६॥

[र] रहनि रहै रजनी नहिं ब्यापै, रतै मतै गुरु बानी ।
राह बतावौं दया जानि जिव, जा तें होय न हानी ॥
रमता राम काम करि अपना, सुपना है संसारा ।
रार रोर तजि रच्छक सेवो, जा तें होय उबारा ॥

(१) अथाह । (२) मस्त हाथी । (३) भयानक । (४) विचारै ।

रैन दिवस उहवाँ नहीं, पुरुष प्रकास अँजोर।
राखो तेई ठाँव जिव, जहाँ न चाँपै चोर ॥२७॥

(ल) लगन लगी जेहि गुरु चरनन की, लच्छन प्रगट तेहिं ऐसा।
लगन लगी तब मगन भये मन, लोक लाज कुल कैसा ॥
लगा रहै गुरु सुरत परेखै, निज तन स्वार्थ न सूझै।
लागै ठोकर पीठ न देवै, सूरा सन्मुख जूझै ॥
लहर लाज मन बुद्धि की, निकट न आवै ताहि।
लोटै गुरु चरनन तरे, गुरु सनेह चित जाहि ॥२८॥

(व) वाके निकट काल नहिं आवै, जो सत सब्द समाना।
वार पार की संसय नाहीं, वाही में मन साना ॥
वासिलवाकी का डर नाहीं, वारिस हाथ बिकाना।
वारिस को सौंपै अपने तईं, वाही हृदय समाना ॥
वाकिफ हो सो गमि लहै, वाजिब सखुन अजूब।
वाही की करु बन्दगी, पाक जात महबूब ॥२९॥

(श) शहर चोर घनघोर करेरे, सोवैं सब घरवारी।
शोर कर निर्भरमै सोवै, लागी बिषम खुमारी ॥
साहिब से तो फेर दिल अपना, दुनियाँ बीच बँधाया।
साला साली ससुरा सरहज, समधी सजन सुहाया ॥
सतगुरु सब्द चेतावहीं, समुझि गहै कोइ सूर।
सम बल लीजे हाथ करि, जाना है बड़ दूर ॥३०॥

(ष) खलक सयाना मन बौराना, खोय जान निज कामा।
खबर नहीं घर खरच घटाना, चेते रमता रामा ॥
खोलि पलक चित चेतै अजहूँ, खाविंद सों लौ लावै।
खाम खयाल करि दूर दिवाना, हिरदै नाम समावै ॥

खाल भरी है बायु तें, खाली होत न बार।
खैर[1] परै जेहि काम तें, सो करु बेगि बिचार ॥३१॥
(स) सहज सील संतोष धरन[2] धर, ज्ञान बिवेक बिचार।
दया छिमा सतसंगति साधों, सतगुरु सब्द अधार॥
सुमिरन सत्त नाम का निस दिन, सूर भाव गहि रहना।
समर[3] करै औ जोर परै जो, मन के संग न बहना॥
सैन कहा समुझाय कै, रहनी रहै सो सार।
कहे तरै तो जग तरै, कहनि रहनि बिनु छार ॥३२॥
(ह) हरि आवै हरि नाम समावै, हरि मों हरि को जानै।
हरि हरि कहे तरै नहिँ कोई, हरि भज लोक पयानै॥
हरि बिनसै हरि अजर अमर है, हरी हरी नहिँ सूझै।
हाजिर छाड़ि बुत्त[4] को पूजे, हसद[5] करै नहिँ बूझै॥
हम हमार सब छाड़ि कै, हक्क राह पहिचान।
हासिल हो मकसूद तब, हाफिज अमन अमान ॥३३॥
(क्ष) छैल चिकनियाँ अभै घनेरे, छका फिरै दीवाना।
छाया माया इस्थिर नाहीँ, फिरि आखिर पछिताना॥
छर अच्छर निःअच्छर बूझै, सूझि गुरु परिचावै।
छर परिहरि अच्छर लौ लावै, तब निःअच्छर पावै॥
अच्छर गहै बिबेक करि, पावै तेहि से भिन्न॥
कहै कबीर निःअच्छरहिँ, लहै पारखी चीन्ह ॥३४॥

॥ इति ॥

(१) कुशल। (२) धारना। (३) युद्ध (४) मूरत। (५) द्रोह।

संतबानी की कुल पुस्तकों का सूचीपत्र

[हर महात्मा का जीवन-चरित्र उनकी बानी के आदि में दिया है]

पुस्तक			मूल्य
कबीर साहिब का अनुराग सागर	...	...	१।-)
कबीर साहिब का बीजक	...	...	१)
कबीर साहिब का साखी-संग्रह	...	...	१॥)
कबीर साहिब की शब्दावली, पहला भाग	...	...	१)
कबीर साहिब की शब्दावली, दूसरा भाग	...	...	१)
कबीर साहिब की शब्दावली, तीसरा भाग	...	...	॥)
कबीर साहिब की शब्दावली, चौथा भाग	...	...	।)
कबीर साहिब की ज्ञान-गुदड़ी, रेखते और झूलने	...	...	॥)
कबीर साहिब की अखरावती	...	...	।)
धनी धरमदास जी की शब्दावली	...	...	।॥)
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली भाग १	...	...	१॥)
तुलसी साहिब दूसरा भाग पद्मसागर ग्रंथ सहित	...	...	१॥)
तुलसी साहिब का रत्नसागर	..	...	१।॥)
तुलसी साहिब का घट रामायण पहला भाग	...	...	२)
तुलसी साहिब का घट रामायण दूसरा भाग	...	...	२)
दादू दयाल की बानी भाग १ "साखी"	..	...	२)
दादू दयाल की बानी भाग २ "शब्द"	..	...	१॥≡)
सुन्दर बिलास	...	..	१।≡)
पलटू साहिब भाग १—कुंडलियाँ	.	...	१)
पलटू साहिब भाग २—रेखते, झूलने, अरिल, कबित्त, सवैया		...	१)
पलटू साहिब भाग ३—भजन और साखियाँ	...	..	१)
जगजीवन साहिब की बानी पहला भाग	..	..	१-)
जगजीवन साहिब की बानी दूसरा भाग	...	..	१-)
दूलन दास जी की बानी	...	..	।≈)